छुटकारे का इतिहास – भाग 7

अध्याय 45: आने वाला राजा और उसकी आश्वस्त कलीसिया

डॉ. बार्ट बॉक्स

शुभ प्रभात। अपनी बाइबल को खोलें और मेरे साथ निकालें 1 थिस्सलुनीकियों, अध्याय 4. 1 थिस्सलुनीकियों, अध्याय 4. आज हम 13 से 18 तक के पदों को देखेंगे। इस सप्ताह, हमने प्रेरितों के काम और 1 कुरिन्थियों के कुछ भागों को पढ़ा। यद्यपि हम 1 थिस्सलुनीकियों में कुछ और भागों को भी देखेंगे, लेकिन आज मैं ने सोचा कि हम केवल अध्याय 4 के छह पदों, 13 से 18 तक पर ध्यान केन्द्रित करेंगे, जब हम आने वाले राजा और उसकी आश्वस्त कलीसिया के बारे में विचार करते हैं। एक आने वाला राजा और उसकी आश्वस्त कलीसिया।

आइए हम प्रार्थना करें। पिता हम आपके वचन के लिए अत्यधिक कृतज्ञ हैं, और साथ ही, हमारी सहायता के लिए हम आपके आत्मा पर निर्भर हैं जब हम प्रचार करते हैं और आपके वचन से सुनते हैं। और इसलिए आपके आत्मा पर निर्भरता में हम प्रार्थना करते हैं, कि आप ध्यान भटकाने वाली बातों को दूर करें, आप गलतफहमी को दूर करें, और अपने आत्मा के द्वारा आप हमारे मनों में मसीह के लिए प्रेम और चाहत को भरें, जो हमारा उद्धारकर्ता है जो आया, और जो पुनः आने वाला है। यीशु के नाम में हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।

इस सप्ताह जब मैं ने इस पद्यांश का अध्ययन किया, और पुनरूत्थान और मसीह के लौटने पर इसके अत्यधिक बल के साथ, मेरा मन बार–बार जॉन पेटन की कहानी की ओर जा रहा था। आप से बहुत से लो इसे पहले सुन चुके हैं। संभवतः किसी दूसरे व्यक्ति से बढ़कर, हमारे समय में जॉन पाइपर ने उसकी कहानी को प्रसिद्ध किया है। परन्तु यह इस पद के केन्द्र को इतनी अच्छी तरह से जकड़ती है, और वास्तव में उसके जीवन के पीछे और सदियों से मसीहियों के लिए आगे बढ़ाने वाली ताकत रही है।

जॉन पेटन न्यू हेब्राइड्स नामक दक्षिणी प्रशान्त द्वीप में एक मिशनरी था। वह 1858 से 1905 तक, लगभग 50 वर्षों तक दक्षिणी प्रशान्त द्वीप समूहों में रहा जिन्हें न्यू हेब्राइड्स के नाम से जाना जाता है। वहाँ रहते समय, हर प्रकार के विरोध के बावजूद, इस तथ्य के बावजूद कि जब वह द्वीप पर पहुँचा था तो वहाँ एक भी मसीही गवाह नहीं था, लेकिन उसके वापस लौटने के समय, लगभग पूरा द्वीप जिस पर वह रहा था मसीह में आ चुका था।

परन्तु जो लोग जॉन पेटन की कहानी से परिचित हैं, हम जानते हैं कि वहाँ पहुँचना आसान नहीं था। पेटन के न्यू हेब्राइड्स के लिए जहाजी यात्रा शुरू करने से उन्नीस वर्ष पूर्व, 1839 में, पहले मसीही मिशनरी, जॉन और जेम्स हैरिस, न्यू हेब्राइड्स में पहुँचे। और किनारे पर पहुँचने के कुछ ही मिनट के अन्दर, उन्हें वहाँ के निवासियों द्वारा मार दिया गया, और वे नरभक्षियों के शिकार बन गए।

और इसलिए, जब पेटन, जो अपने समय का सफल सेवक था, ने जब 19 वर्ष पश्चात् एक विशेष सभा में एकत्रित पासबानों के समूह के सामने एक मिशनरी के रूप में न्यू हेब्राइड्स जाने का प्रस्ताव रखा, तो उसका प्रतिरोध किया गया और बहुत विरोध हुआ। वहाँ एक व्यक्ति था जिसे जॉन पेटन अपनी आत्मकथा में याद करता है, मिस्टर डिकसन नामक व्यक्ति। वह समूह के बीच पुरनिया था, और उसने कुछ ऐसा कहा जिसके बारे में हर कोई सोच रहा था। जब पेटन से मिशनरी के रूप में न्यू हेब्राइड्स जाने की योजना के बारे में बताया, तो मिस्टर डिकसन ने जवाब देते हुए कहा, "नरभक्षी लोग, नरभक्षी लोग तुम्हें खा जायेंगे।" बहुत उचित जवाब, क्या आप नहीं सोचते?

परन्तु पेटन जो कहता है, वह मेरे सर्वकालिक पसन्दीदा कथनों में से एक है। मेरा मतलब है, यह धाराशायी करने जैसा कथन है। पेटन ने कहा, "मिस्टर डिकसन, तुम्हारी उम्र अब काफी हो चुकी है, और तुम्हारे आसार ये हैं कि जल्द ही तुम कब्र में गाड़ दिए जाओगे और वहाँ कीड़े तुम्हें खायेंगे। मैं तुम्हारे सामने मान लेता हूँ कि यदि मैं जीवित रहकर प्रभु यीशु की सेवा और आदर करते हुए मरूँ, तो मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मुझे नरभक्षियों द्वारा खाया जाएगा या कीड़ों द्वारा। और उस महान दिन में, तुम्हारी देह के समान मेरी देह भी हमारे जी उठे उद्धारकर्ता की समानता में पुनरूत्थान को प्राप्त करेगी।"

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि उस समय मिस्टर डिकसन को कैसा महसूस हुआ होगा? और वहाँ वास्तव में मुँह छिपाने का कोई स्थान नहीं था। इसके बारे में आपका क्या कहना है? जब आप इस प्रकार से कहते हैं तो यह धर्मविज्ञानी रूप से मात देने के समान है। आपके यह कहने के बाद फिर कुछ शेष नहीं रहता है कि, "तुम्हारी देह के समान मेरी पुनरूत्थान प्राप्त देह भी जी उठेगी।"

और मैं चाहता हूँ आप इसे सुनें, और फिर मैं उसके साथ तीन कथनों को बताना चाहता हूँ जिन्हें मैं ने इस सप्ताह एक ऑनलाइन मंच में पाया। यह सब के लिए खुला है, मृत्यु पर एक ऑनलाइन मंच। सुनें– पेटन ने क्या कहा, और फिर मैं चाहता हूँ आप सुनें कि हमारे समय में लोग मृत्यु के बारे में क्या कहते हैं। सुनें एक लड़की ने क्या कहा है। उसने कहा, "मैं केवल 22 वर्ष की हूँ, लेकिन मुझे मरने का अत्यधिक भय है।

ऐसा नहीं है कि मैं इस बारे में चिन्तित हूँ कि मैं कैसे मरूंगी; बल्कि यह कुछ ऐसा है जैसे कि मैं कभी उठने की कल्पना ही नहीं कर सकती। मैं जानती हूँ कि जीवन जन्म और मृत्यु पर आधारित है, परन्तु मेरे लिए यह एक भयावह विचार है। मैं जमीन से ऊपर गाड़े जाने की पहले ही योजना बना चुकी हूँ, जमीन के ऊपर एक ढाँचा जिसे मकबरा कहा जाता है। यह एक प्रकार का छोटा घर है। मैं चाहे केवल 22 वर्ष की हूँ," वह कहती है, "लेकिन कोई भी किसी भी समय, किसी भी तरीके से मर सकता है। मैं जवानी में मरने से डरती हूँ, और मैं बुढ़ापे में मरने से डरती हूँ।"

दूसरी एक महिला ने कहा, "मेरी मुख्य चिन्ताओं में से एक है किसी प्रियजन की मृत्यु। इसने मुझे पुनः इस बात पर विचार करने के लिए मजबूर किया है कि मेरे कितने बच्चे हों, जो कि निराशाजनक है। केवल यह जानना कि आप इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते, और यह कि मृत्यु पूर्णतः नियन्त्रण से बाहर है," वह कहती है।

और संभवतः सबसे अधिक खुलासा करने वाला कथन, इस बार एक नास्तिक की ओर से। उसने कहा, "मेरा कोई धर्म या मरणोपरान्त जीवन में विश्वास नहीं है। इस कारण," और यह रूचिकर है, "इस कारण, मेरे नास्तिक बनने का निर्णय लेने के बाद से मृत्यु और अज्ञात के बारे में मेरा भय बढ़ गया है। यद्यपि बचपन में मेरा पालन–पोषण धार्मिक माता–पिता द्वारा नहीं किया गया था, लेकिन मुझे स्वर्ग और बहुत सी बातों के बारे में बताया गया। परन्तु अब मैं जानता हूँ कि कब्र के पार कुछ भी नहीं है, और यह विचार," वह कहता है, "मुझे रात में जगाए रखता है।" उसने कहा, "मैं पूर्णतः निश्चित नहीं हूँ कि मैं क्या सहायता चाहता हूँ, या मुझे किस सहायता की आवश्यकता है। काश कुछ ऐसा होता जो मुझे मृत्यु के बारे में सांत्वना दे सकता।"

और भाइयो और बहनो, संसार जिसके लिए लालायित है, संसार को जिसे सुनने की अत्यधिक आवश्यकता है, और मसीह से अलग संसार में जो नहीं है, वह हमारे पास सुसमाचार में है। सुसमाचार में हमारे पास दूसरे एक जीवन की प्रतिज्ञा है। इस संसार में, हमारे पास प्रतिज्ञा है कि जब हम अपने चारों ओर देखते हैं, और हम दर्द को देखते हैं, और हम निराशा को देखते हैं, और हम कठिनाई को देखते हैं, और हम रोग को देखते हैं, और हम मृत्यु को भी देखते हैं, तो हम निश्चित रूप से यह जानते हैं कि ये सारी बातें अन्तिम नहीं हैं। अन्तिम वही है जो सदा के लिए रहता है, और वह मसीह की मृत्यु, गाड़ा जाना, और पुनरूत्थान और उसका आने वाला राज्य है। वह सदा सर्वदा के लिए है। हमारे पास एक अच्छा सुसमाचार है।

हमारे पास एक अच्छी खबर है जो हमारी आत्माओं और सम्पूर्ण संसार के लिए अच्छी है। और मैं उसी सुसमाचार को चाहता हूँ; उस सुसमाचार और उसके आने की प्रतिज्ञा को मैं अपने मन में बैठाना चाहता हूँ; और उसे मैं आज हम सबके मन में बैठाना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि हम इतने मसीह–केन्द्रित हों, इतने सुसमाचार–केन्द्रित हों, कि हमारी आशा और संसार की आशा में स्पष्ट अन्तर नजर आए।

और इसलिए, आज मैं आपको वहाँ ले जाना चाहता हूँ जहाँ मैं सोचता हूँ कि यह प्रकट और इतना स्पष्ट है यहाँ पौलुस की पत्रियों में 1 थिस्सलुनीकियों 4:1–3, एक आने वाला राजा और उसकी आश्वस्त कलीसिया।

पहले, मैं उस अन्तर के बारे में आप से बात करना चाहता हूँ जिसे हम विश्वासियों के बीच में देखते हैं; कैसे हमारी आशा संसार की आशा से अलग है। और वास्तव में, और मृत्यु के बारे में हमारे प्रत्युत्तर और मृत्यु के बारे में संसार के प्रत्युत्तर की रीति में वास्तव में अन्तर होना चाहिए।

और फिर मैं चाहता हूँ, जब हम समाप्त करते हैं, तो सोचें, किस प्रकार, प्रभु यीशु के आने की धन्य आशा के बारे में यह पद, कैसे हमारे जीवनों पर प्रभाव डालता है?

और इसलिए पहले, मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ देखें कि मृत्यु के बारे में हमारा प्रत्युत्तर संसार की हताशा से अलग है। मृत्यु के बारे में हमारा प्रत्युत्तर संसार की हताशा से अलग है। अब, हम सटीक परिस्थितियों को नहीं जानते हैं। हम नहीं जानते कि वास्तव में क्या हो रहा था। हम नहीं जानते कि मसीह के दूसरे आगमन के बारे में उनके बीच में असमंजस क्यों था। वे जानते थे कि यह होने वाला है। परन्तु किसी बिन्दू पर, मृतकों को शामिल करने के बारे में उनमें कुछ गलतफहमी उत्पन्न हो गई थी।

पौलुस आया था; उसने उनसे सुसमाचार का प्रचार किया था। उसने उन्हें दूसरे आगमन के बारे में बताया था। वह कुछ समय के लिए चला गया था। वह उन्हें लिखता है, या उसे उन से सूचना मिलती है कि वहाँ असमंजस है। वहाँ असहमति है। वहाँ गलतफहमी है। उनका क्या होगा जो मसीह के आने से पहले मर गए हैं?

और हम नहीं जानते कि यह कैसे हुआ, झूठे शिक्षकों के कारण, या पौलुस ने उस समय सारी बातों को नहीं समझाया। परन्तु हम यह जानते हैं कि पौलुस यहाँ 1 थिस्सलुनीकियों अध्याय 4 में, अपनी शिक्षा से उन्हें सांत्वना भी दे रहा है, और मेरा विचार है, उन्हें चुनौती भी दे रहा है, जैसा हम कुछ ही पलों में

देखेंगे। और वास्तव में, वह उनके अनुरूप है जो हम जानते हैं। पौलुस उन्हें संसार से अलग बनने की चुनौती दे रहा है। और यह थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के बारे में हमारी जानकारी के अनुरूप है।
और मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ प्रेरितों के काम अध्याय 17 पर चलें, जहाँ प्रेरितों के काम में हम बार–बार देखते हैं, जहाँ हम थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के साथ पौलुस के पहले व्यवहार के बारे में पढ़ते हैं, और फिर पत्री में भी, जहाँ हम बार–बार इस अन्तर को देखते हैं, संसार और कलीसिया के बीच फर्क के इस विचार को हम बार–बार देखते हैं।

प्रेरितों के काम 17 को देखें, और वहाँ पढ़ते हैं लूका पहली बार पौलुस और सीलास के कुरिन्थ के नगर में जाने के बारे में लिखता है। देखें वह पद 1 में क्या कहता है। वह कहता है, पौलुस और सीलास के बारे में बताते हुए वह लिखता है, "फिर वे अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके में आए, जहाँ यहूदियों का एक आराधनालय था। पौलुस अपनी रीति के अनुसार उनके पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्र शास्त्रों से उनके साथ वाद–विवाद किया; और उनका अर्थ खोल खोलकर समझाता था कि मसीह को दुःख उठाना, और मरे हुओं मे से जी उठना, अवश्य था; और 'यही यीशु जिसकी मैं तुम्हें कथा सुनाता हूँ, मसीह है।' उनमें से कितनों ने, और भक्त यूनानियों में से बहुतों ने, और बहुत सी कुलीन स्त्रियों ने मान लिया, और पौलुस और सीलास के साथ मिल गए।"

अतः, पौलुस वही करता है जो वह हमेशा करता है। वह आराधनालय में जाता है, एक स्थान जहाँ उस नगर में वह पहले कभी नहीं गया था। फिर वह पवित्र शास्त्रों से पढ़ता है। वह उन्हें समझाता है; वह उन्हें समझाता है कि यीशु ही मसीह है। कुछ यहूदियों, और यूनानियों और कुछ कुलीन स्त्रियों ने विश्वास किया।

और पद 5 में वह कहता है, "परन्तु यहूदी डाह से भर गए।" प्रत्येक व्यक्ति ने विश्वास नहीं किया। "परन्तु यहूदियों ने डाह से भरकर बाजारू लोगों में से कुछ दुष्ट मनुष्यों को अपने साथ में लिया, और भीड़ इकट्ठी कर के नगर में हुल्लड़ मचाने लगे, और यासोन के घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगों के सामने लाना चाहा। उन्हें वहाँ न पाकर वे यह चिल्लाते हुए यासोन और कुछ भाइयों को नगर के हाकिमों के सामने खींच लाए," और यह कथन मुझे पसन्द है, "ये लोग जिन्होंने जगत को उलटा पुलटा कर दिया है, यहाँ भी आ गए हैं।"

पद 7 में, "यासोन ने उन्हें अपने यहाँ उतारा है। ये सब के सब यह कहते हैं कि यीशु राजा है, और कैसर की आज्ञाओं का विरोध करते हैं।" क्या हम नहीं चाहते कि हमारे बारे में भी ऐसा ही कहा जाए? जब संसार कहता है कि धन राजा है, और ताकत राजा है, और सेक्स राजा है, और प्रभाव राजा है, और सफलता राजा है, और प्रसिद्धि राजा है, और ब्रूक हिल्स के लोग, वे नहीं कहते हैं कि ये बातें राजा हैं। वे कहते हैं यीशु राजा है। उनका राजा दूसरा है जिसका नाम यीशु मसीह है।

पौलुस कहता है कि एक अन्तर होना चाहिए। यह कलीसिया की स्थापना के समय से ही प्रकट है, और पत्री में भी यह प्रकट है। मैं चाहता हूँ आप उसी विचार पर ध्यान दें, संसार और कलीसिया के बीच यह अन्तर। पुनः 1 थिस्सलुनीकियों अध्याय 1 में देखें, जहाँ पद 7 से 10 में हम देखते हैं– देखें पौलुस क्या कहता है। पद 8 से शुरू करें, "क्योंकि तुम्हारे यहाँ से न केवल मकिदुनिया और अखया में प्रभु का वचन सुनाया गया, पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है कि हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं। क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ; और तुम कैसे मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो, और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु की, जो हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है।"

परमेश्वर के लोगो, आप देखते हैं कलीसिया के आरम्भ से ही, पहले अध्याय में ही, और अध्याय 4 में भी, पौलुस संकेत देता है कि संसार और कलीसिया के बीच अन्तर होना चाहिए। और दो स्थान जहाँ परमेश्वर के लोगों को अलग होना चाहिए वह है सबसे पहले हमारा व्यवहार, और दूसरा, हमें अपने विश्वासों में अलग होना चाहिए।

परमेश्वर के लोगों को अलग होना चाहिए, अपने व्यवहार और विश्वास में संसार के लोगों से स्पष्टतः अलग होना चाहिए। और इन दोनों को एक साथ लेने के पीछे एक कारण है। पुनः अध्याय 4, पद 13 को देखें। जब हम पद 13 को देखते हैं, मैं चाहता हूँ आप देखें कि कैसे हम जो विश्वास करते हैं वह हमारे कार्य को प्रभावित करता है। ध्यान दें, ऐसा नहीं है कि यहाँ हमारे कुछ निश्चित विश्वास हैं, और यहाँ हमारे कुछ निश्चित व्यवहार हैं। इसका मतलब है कि हम जो विश्वास करते हैं, हम जिसे पसन्द करते हैं, हमें जो अच्छा लगता है, हमारे सिद्धान्त, ये सब हमारे कार्य पर प्रभाव डालते हैं। और पद 13 में हम इसे देखते हैं, "हे भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञानी रहो।"

स्पष्ट है कि कुछ गलतफहमी थी, कुछ ऐसा जो उन्हें समझ में नहीं आया था। और इसलिए पौलुस यहाँ पर रिक्त स्थानों की पूर्ति का प्रयास कर रहा है। वह उनकी अज्ञानता को दूर करने का प्रयास कर रहा था। क्यों? इसलिए नहीं कि वे किसी धर्मविज्ञान की प्रश्नोत्तरी में अच्छे अंक प्राप्त कर सकें। इसलिए नहीं कि उनके पास सारे सही उत्तर हों, बल्कि इस कारण कि हम जो विश्वास करते हैं वह हमारे कार्य को प्रभावित करता है। और बिल्कुल यही हम शेष पद में देखते हैं, "हम नहीं चाहते कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञानी रहो।" दूसरे शब्दों में, जो लोग चले गए हैं, या जो मसीह में मर गए हैं। क्यों? "ऐसा न हो कि तुम दूसरों के समान शोक करो जिन्हें आशा नहीं।" दूसरे शब्दों में, मसीह की मृत्यु, गाड़ा जाना, और पुनरूत्थान में हमारा विश्वास, हमारा निश्चय कि वह सही है उसके द्वारा हमारा कार्य प्रभावित होना चाहिए, और इसके द्वारा दुःख के बारे में हमारे सोचने की रीति, और निपटने की रीति प्रभावित होनी चाहिए।

अब, मैं वास्तव में स्पष्ट रहना चाहता हूँ, और वास्तव में सावधान रहना चाहता हूँ, मैं नहीं चाहता कि मुझे किसी भी रीति से गलत समझा जाए। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि हमें दुःखी नहीं होना चाहिए। पौलुस यह नहीं कहता है कि जब हमारे पिता की मृत्यु हो जाती है, या माता की मृत्यु हो जाती है, या मित्र की मृत्यु होती है, या बच्चे की मृत्यु होती है– तो पौलुस यह नहीं कह रहा है कि हमें दुखी नहीं होना चाहिए। हम दुखी होंगे, और हमें दुखी होना चाहिए। यीशु लाजर की कब्र पर रोया।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि हमें मृत्यु से नफरत नहीं करनी चाहिए, और हमें मृत्यु के सारे पहलुओं के विरूद्ध युद्ध नहीं करना चाहिए। हमें करना चाहिए। हमें मृत्यु से घृणा करनी चाहिए। यह परमेश्वर द्वारा निर्धारित किए गए क्रम के विपरीत है। परन्तु इसका मतलब है, कि हम उन लोगों के समान दुखी नहीं होते हैं जिन्हें कोई आशा नहीं है। इसका मतलब है हमारे सोचने के तरीके, दुख से निपटने की हमारी रीति मूलभूत रूप से अलग है। और मैं चाहता हूँ कि मेर हृदय में, मेरे परिवार में ऐसा ही हो; और मैं चाहता हूँ कि आपके हृदय में और आपके परिवार में भी ऐसा ही हो।

हमें मसीह की मृत्यु, दफनाए जाने, और पुनरूत्थान में ठोस विश्वास होना चाहिए, उसके दूसरे आगमन के बारे में इतना ठोस विश्वास कि बाहर के लोग हमें दुख से पहले, और दुख के बीच में, और दुख के बाद में देखें और कहें, "ये लोग कुछ अलग हैं। इनके बारे में कुछ विशेष है। कोई आशा है जो उनकी कल्पना का भाग नहीं है। कोई आशा है जो ऐसी नहीं है जिसे वे अपने आप से कर रहे हों। उनके दिल बसने वाली कोई आशा है, जो हम में से किसी भी व्यक्ति के सामने आने वाली सबसे बड़ी समस्या, यानि मृत्यु का सामना करने की रीति को बदलती है, उससे निपटने की उनकी रीति को आकार देती है।"

हमें मृत्यु के बारे में अपने प्रत्युत्तर में अलग होना चाहिए। क्यों? क्योंकि हमारा प्रत्युत्तर सुसमाचार की कहानी पर आधारित है। हम मृत्यु का अलग रीति से जवाब कैसे दें? यह कैसे है कि हम संसार की हताशा के साथ प्रत्युत्तर नहीं देते हैं? केवल इस कारण कि मृत्यु के बारे में हमारा प्रत्युत्तर सुसमाचार की कहानी पर आधारित है। जो कुछ कहा गया है, इस सन्देश में भी, और निश्चित रूप से इस पद में भी जो बहता है– पद 14, पद 14 में एक शब्द पर ध्यान दें। आप इसे रेखांकित कर सकते हैं, जहाँ वह कहता है, "हम नहीं चाहते कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं," पद 13, "अज्ञानी रहो। ऐसा न हो कि तुम दूसरों के समान शोक करो जिन्हें आशा नहीं।"

और फिर पद 14, पहला शब्द क्या है? वह कहता है, "क्योंकि–" यही शब्द वास्तव में नियन्त्रण करता है। हम क्यों चाहते हैं कि तुम– आप क्या देखते हैं कि अन्तर का आधार क्या है। यह वह सब है जो हम पद 14 में देखते हैं, "क्योंकि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जी भी उठा।" प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार ही अन्तर लाता है, और कुछ नहीं। जो यीशु ने किया है केवल वही अन्तर को बनाता है, अन्तर का कारण है, जिसे हम संसार और कलीसिया के बीच में देखते हैं।

और इस पद में हम देखते हैं, पौलुस कहता है कि यीशु का पुनरूत्थान दो बातें हैः पहला, यह सबूत कि परमेश्वर मरे हुओ को जिन्दा कर सकता है। वहाँ पौलुस हमें बता रहा है, "यीशु मरा और जी उठा।" यानि ये ऐतिहासिक तथ्य हैं। यानि इन बातों पर हम भरोसा कर सकते हैं। यानि ये बातें वास्तव में हुई हैं। परन्तु यह केवल सबूत ही नहीं है कि परमेश्वर मृतकों को जिन्दा कर सकता है। पौलुस जो बता रहा है कि यह केवल इस बात का सबूत ही नहीं है कि परमेश्वर मरे हुओं को जिन्दा कर सकता है, बल्कि यह एक वायदा है। यह एक वायदा भी है कि वह मरे हुओं जिला उठाएगा। यह केवल सबूत ही नहीं है कि परमेश्वर मृतकों को जीवित कर सकता है, बल्कि यह हमसे परमेश्वर का वायदा है कि वह मरे हुओं को जिन्दा करेगा। अब आप इसके बारे में सोचें।

आप कैसे जानते हैं कि आप मृतकों में से जी उठेंगे? क्या हम ईमानदारी से यह नहीं कहेंगे, "तुम जानते हो? इस बात पर विश्वास करना थोड़ा कठिन है।" आप इसके बारे में सोचें, आप कितने लोगों को जानते हैं जो मरे और जी उठे, और जो फिर कभी नहीं मरेंगे? आप कितने लोगों को जानते हैं? आप इसके बारे में सोचें, पिछली बार कब हमने किसी व्यक्ति से परिचय करते समय कहते, "तुम जानते हो, यह लेखा विभाग से जॉन है। हम एक साथ कार्य करते हैं, और हम अच्छे मित्र हैं। हम कॉलेज में एक साथ पढ़ते थे। अरे, हाँ, मैं तुम्हें बताना भूल गया, वह मर गया था, परन्तु अब वह जीवित है, और वह अब कभी नहीं

मरेगा। यह कैसा होगा?" कितने लोग? हम किसी को नहीं जानते। ऐसे लोगों की सूची अत्यधिक छोटी है जो मर कर जी उठे, और फिर कभी नहीं मरेंगे।

परन्तु भाइयो और बहनो, यह सुसमाचार की सामर्थ और खूबसूरती है। मसीह और उसके अनुयायियों के बीच घनिष्ट संबंध है। और प्रभु यीशु मसीह और उसके अनुयायियों के बीच इतनी घनिष्ट एकता है, कि नया नियम सिखाता है कि मसीह जो कुछ है, उससे हमें लाभ होता है। जो कुछ मसीह करता है, वह हमारे लिए किया गया है। जो कुछ मसीह के साथ हुआ है वह हमारे साथ भी होगा।

इसी कारण आप बार–बार देखते हैं, "मसीह में, मसीह में।" जो कुछ मसीह के पास है, वह हमारे पास भी है। हमारे पास भी है। यह एक प्रकार से विवाह के समान है। आप कॉलेज जाने वाले एक युवा के बारे में सोचें जो विवाह करता है। और विवाह करने से पहले वह हर प्रकार का कर्जा उठाता हैः एक के बाद एक क्रेडिट कार्ड लेता है। और फिर परमेश्वर के अनुग्रह से, उसे एक ऐसी पत्नी मिलती है जिसके पास बहुत अधिक धन है, और वह उससे विवाह करने को सहमत हो जाती है। और वे एक साथ आते हैं, और अचानक हम उस विवाह में देखते हैं – कि जो कुछ उस युवा का था – कर्जा – वह पत्नी का बन जाता है। और जो कुछ पत्नी का था – धन – वह उसका बन जाता है। और इस पद में पौलुस हमें यही सिखा रहा है।

देखें वह कहता है, "क्योंकि यदि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जी भी उठा," उसके बाद हम देखते हैं, "तो वैसे ही," पौलुस इसी बिन्दू को बता रहा है। हाँ, हम ऐतिहासिक मृत्यु और पुनरूत्थान पर विश्वास करते हैं, परन्तु यहाँ पौलुस द्वारा उसके बारे में बताने का कारण है कि वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी, जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा। इसका अर्थ है; पौलुस केवल यह कह रहा है, कि जब मसीह लगभग 2,000 वर्ष पूर्व कब्र से निकला, तो यह केवल इस बात का प्रमाण नहीं था कि वह कौन था और उसने क्या किया था, यद्यपि उसमें यह सब था। यह मसीह में प्रत्येक विश्वासी से परमेश्वर का अपरिवर्तनीय वायदा भी था कि हम भी, मरेंगे। हम भी गाड़े जायेंगे। और परमेश्वर की स्तुति हो, कि हम भी, मृतकों में से जी उठेंगे।

मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा, परमेश्वर ने वायदा किया है, कि हम उसके साथ जी उठेंगे। सुकरात ने मृत्यु के बारे में यह कहा। उसने कहा, "ओह, काश कोई ऐसा दिव्य वचन होता जिस पर हम अधिक सुरक्षा और कम विनाश के साथ यात्रा कर सकते।" भाइयो और बहनो, हमारे पास दिव्य वचन से

बढ़कर है। हमारे पास स्वयं दिव्य वचन है, जो आया और मरा और पुनः जी उठा। और हम उसके स्वप्न पर चलेंगे। हमारा प्रत्युत्तर संसार की हताशा से अलग है। क्यों? क्योंकि यह सुसमाचार की कहानी पर आधारित है। और नम्बर तीन, और यह प्रभु के निश्चित आगमन के द्वारा ताकत पाता है। प्रभु के निश्चित आगमन के द्वारा ताकत पाता है। पद 15 को देखें। यह मेरे विचार में, इस पद्यांश का केन्द्र है, पद 15 से 17, जहाँ पौलुस कहता है, "क्योंकि हम कहते हैं–"

और पद 15 एक प्रकार से साराँश है, उसका जिसे वह पद 16 और 17 में कहने वाला है। अतः, पद 15 एक प्रकार से साराँश कथन है; 16 और 17 में वह इसे स्पष्ट करता है। पद 15, "क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से कहते हैं," और हम नहीं जानते पौलुस इससे वास्तव में क्या समझता है। हम नहीं जानते कि यह इस बिन्दू पर किसी प्रकार का अलौकिक प्रकाशन था, या यह कुछ ऐसा था जिसे उसने यीशु की शिक्षाओं से सुना था, जिसे उसने दूसरों से सुना था। परन्तु उसके पास यह अधिकार स्वयं यीशु की ओर से है।

वह कहता है, "क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिए जायेंगे कि हवा में प्रभु से मिलें; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।"

जब मैं 18 या 19 वर्ष का था, मेरा परिचय भविष्यद्वाणी की कुछ पुस्तकों से हुआ। उन में से कुछ आज भी मेरे कार्यालय में हैं। और मैं ने उन्हें खा लिया। मेरा मतलब है, भविष्द्वाणी के बारे में मुझे लो कुछ भी मिला मैं ने वह सब पढ़ा। मैं दानिएल के हर प्राणी के बारे में जानता था। मैं यहेजकेल के प्रत्येक दर्शन को जानता था। में प्रकाशितवाक्य की प्रत्येक पुस्तक, तुरही, और कटोरे को जानता था। मैं सिखाता भी था – मुझे याद है मैं ने युवाओं के बाइबल अध्ययन में भविष्यद्वाणी के बारे में सिखाया भी था। उस समय उनके जीवन में उन्हें उसी की आवश्यकता था, निर्णायक समय, और उन्हें चार्ट की अत्यधिक आवश्यकता थी।

मैं वह "भविष्यद्वाणी का बालक" था। और मैं उन बातों के बारे में सोचकर काँप जाता हूँ जिन्हें मैं ने सिखाया था। हाँ, यह अच्छा नहीं था। काश, आज मैं आप से कह पाता, "हाँ, मैं ने यह सब समझ लिया

है। यह सब अच्छा है। अब कोई रहस्य नहीं है। मैं आपको हर बात बता सकता हूँ। मैं आपको बता सकता हूँ यह सब कैसे होने वाला है।"

सच्चाई यह है, कि अब भी बहुत कुछ गुप्त है, और अब भी बहुत सी बातें हैं जिन्हें मैं नहीं समझता। परन्तु मेरा सन्देह है कि आपके बारे में भी यही सत्य है। ऐसी बातें होंगी जिन्हें आपने दानिएल और यहेजकेल और छोटे भविष्यद्वक्ताओं में पढ़ा होगा, और ऐसी बातें जिन्हें आपने मत्ती और प्रकाशितवाक्य में पढ़ा होगा जो आपको समझ में नहीं आती हैं। परन्तु बात यह हैः परमेश्वर हमें इसलिए नहीं बुला रहा है, मेरा विश्वास है, परमेश्वर हमें उन बातों पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए नहीं बुला रहा है जिन्हें हम नहीं जानते हैं। इसके विपरीत परमेश्वर हमें उन बातों पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए बुला रहा है जिन्हें हम जानते हैं।

व्यवस्थाविवरण 29:29 में मूसा ने कहा, "गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं; परन्तु जो प्रकट की गई हैं वे सदा के लिए हमारे और हमारे वंश के वश में रहेंगी।" दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने कुछ बातों को अपने वचन में पूर्णतः स्पष्ट किया है। और उसने हमारे मस्तिष्क को कुछ निश्चित विचारों से भरने के लिए ऐसा नहीं किया है। बल्कि उसने हमें अपने विश्वास में मजबूत बनाने के लिए उन्हें हमें दिया है। हमें मसीह में उत्साहित करने के लिए। हमें मसीह के स्वरूप में बदलने के लिए।

और इसलिए, आज मेरी प्रार्थना है जब हम इन पदों को देखते हैं तो उन बातों को देखें जो स्पष्ट रूप से प्रकट हैं, और जब हम इसके बारे में सोचते हैं, और हम मसीह के महिमामय आगमन पर विचार करते हैं, तो उसके प्रति हमारा प्रेम उत्पन्न हो, और जब हम इसके बारे में सोचते हैं, तो हम मसीह के आगमन की लालसा रखें जैसे पौलुस यहाँ 1 थिस्सलुनीकियों 4:15–17 में वर्णन करता है।

और मैं चाहता हूँ आप कुछ बातों पर ध्यान दें जिन्हें हम निश्चित रूप से जानते हैं। बहुत सारी बातें ऐसी हैं जिन्हें हम नहीं जानते हैं, परन्तु इन बातों को हम उसके वचन से जानते हैं। पहली, हम जानते हैं कि वह व्यक्तिगत रूप में आएगा। कि उसका आगमन व्यक्तिगत होगा। पद 16 को देखें। देखें पौलुस क्या कहता है। वह कहता है, "प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा।" व्याकरण के हिसाब से, वह मूल भाषा में केवल एक शब्द को छोड़ सकता था। वह कह सकता था, "प्रभु स्वर्ग से उतरेगा।"

परन्तु यह स्पष्ट है कि पौलुस हमें बताना चाहता है कि प्रभु स्वयं वापस आएगा। वह एक राजदूत को नहीं भेज रहा है। वह एक स्वर्गदूत को नहीं भेज रहा है। वह एक प्रतिनिधि को नहीं भेज रहा है। प्रभु स्वयं

अपने लोगों के लिए आएगा। और यह खुशखबरी है। क्या आप यीशु को देखना नहीं चाहते हैं? क्या हम उसके चेहरे को देखने की लालसा नहीं रखते हैं?

एक स्कॉटिश पासबान, विलियम गतरी ने ऐसा कहा। उन्होंने कहा, "मसीह से कम हमें सन्तुष्ट नहीं करेगा, परन्तु मसीह से अधिक की लालसा नहीं की जा सकती।" मसीह से कम हमें सन्तुष्ट नहीं कर सकता, परन्तु मसीह से अधिक," वे कहते हैं, "की लालसा नहीं की जा सकती।" जो कुछ हमारी आवश्यकता है, जो कुछ हम चाहते हैं, हमारी पूर्णतः छुड़ाई हुई आत्मा की जो भी चाहत हो सकती है, उसे हम मसीह में पायेंगे। और वह हमारी आँखों के सामने व्यक्तिगत रूप में उपस्थित होगा।

हम जानते हैं कि उसका आगमन व्यक्तिगत होगा, और हम जानते हैं कि यह सबके सामने होगा। हम जानते हैं कि यह सबके सामने होगा। वह कहता है, पद 16 में, कि, "प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी।" कुछ लोग इन वचनों में गुप्त रूप में कलीसिया के उठा लिए जाने, कलीसिया को चुपचाप हटा लिए जाने को देखते हैं। मैं नहीं सोचता कि यह पद ऐसा संकेत देता है। वास्तव में, मेरा विचार है कि यह पद संकेत देता है कि यह एक शोरगुल वाली घटना होगी। ऊँची आवाज में प्रभु यीशु मसीह प्रकट होंगे।

वहाँ वह कहता है, "वह बड़ी ललकार के साथ स्वर्ग से उतरेगा।" मुझे वह रूपक पसन्द है जिसका पौलुस प्रयोग कर रहा है। वह शब्द, "ललकार की आवाज," इसका नये नियम से बाहर दूसरी रचनाओं में भी प्रयोग किया गया है। इसका प्रयोग एक योद्धा या राजा के लिए किया जाता है। अब इसे समझें; यह ऐसे योद्धा या राजा के लिए प्रयोग किया जाता है जो युद्ध के लिए निकलने वाला है; जो लड़ाई के लिए जाने वाला है। और जाने से पहले, जब सारे लोग एकत्रित हैं, तो वह ललकार की आवाज निकालता है, विजयघोष करता है।

और पौलुस यहाँ पर कह रहा है कि जब यीशु वापस लौटेगा, वह हमारे अनुरूप बनने के लिए नहीं लौटेगा। वह गुप्त रूप से नहीं आएगा। वह, निश्चित रूप से, अपने पहले आगमन के समान, चरनी में जन्मे बालक के रूप में नहीं आएगा। वह जयघोष के साथ, ललकार की आवाज के साथ आएगा। वह योद्धा राजा के रूप में आएगा, और वह अपने सिंहासन पर बैठेगा। और उसके साथ, पौलुस कहता है, उसके साथ – आप इसे पद में आगे देखते हैं, उसके साथ, "प्रधान दूत का शब्द, और परमेश्वर की तुरही की आवाज होगी।"

हम परमेश्वर की तुरही को कई बार संगीत के वाद्य के रूप में देखते हैं। परन्तु ललकार की आवाज के समान, यह भी उसी विचार के अनुरूप है, कि जब वे युद्ध पर निकलने वाले होते थे, तो वे परमेश्वर की तुरही को, लोग तुरही को फूँकते थे, और यह युद्ध के लिए एक पुकार होती थी। ललकार की आवाज, प्रधान दूत का शब्द, परमेश्वर की तुरही यह संकेत देते हैं कि यह सबके सामने होगा, और जैसा हम अगले भाग में देखते हैं, यह एक सामर्थी आगमन होगा। और न केवल यह व्यक्तिगत रूप में और सबके सामने होगा, बल्कि यह सामर्थी भी होगा। मैं चाहता हूँ आप तीन बातों पर ध्यान दें जिन्हें हम पद 16 के अन्त में और पद 17 में देखते हैं, "जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिए जायेंगे कि हवा में प्रभु से मिलें; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।"

तीन बातेंः पहली, पौलुस कहता है कि मृतक कब्रों में से जी उठेंगे। मृतक अपनी कब्रों में से जी उठेंगे। सारी सदियों के लाखों–करोड़ों मसीही अपनी कब्रों से जी उठेंगे। यह थोड़ा डरावना है, लेकिन यह एक अच्छा विचार है, क्या नहीं? ये सारी कब्रें खुल जायेंगी जब मसीह में सोए हुए जी उठेंगे। और मुझे यह विचार पसन्द है जब वह बताता है कि मसीह में मृतक जी उठेंगे। मृतकों का पुनरूत्थान होगा।
आप यहेजकेल अध्याय 37 के बारे में सोचें। आपको याद है यहेजकेल 37 में यहेजकेल को जो दर्शन दिया गया था? वे बंधुआई में हैं, और यहोवा का वचन उसके पास आता है, और उसे सूखी हड्डियों की तराई में ले जाया जाता है। यह परमेश्वर के लोगों को बताता है; कि वे नष्ट हो गए हैं। वे मार दिए गए हैं। मृत्यु ने उन्हें दबा लिया है।

और परमेश्वर के आत्मा के द्वारा यहेजकेल को हड्डियों से भविष्यद्वाणी करने के लिए कहा जाता है। और जब वह ऐसा करता है, यहेजकेल 37 में, हड्डियों में हलचल होने लगती है, और वे आपस में जुड़कर कंकाल का रूप धर लेती हैं, उन पर माँस चढ़ाया जाता है, और वे अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं। और उनकी देह में जीवन का श्वास फूँका जाता है। और पद 10 में यहेजकेल कहता है, "उसकी इस आज्ञा के अनुसार मैं ने भविष्यद्वाणी की, तब साँस उन में आ गई, और वे जीकर अपने अपने पाँवों के बल खड़े हो गए; और एक बहुत बड़ी सेना हो गई।"

1 थिस्सलुनीकियों अध्याय 4 में जो हम देखते हैं, जब पौलुस कहता है कि जो मसीह में मर गए हैं वे जी उठेंगे, वह सदियों से हड्डियों के रूप में बिखरे हुए परमेश्वर के लोगों के यहेजकेल के दर्शन की मसीह में पूर्णता है, जो जीवित होकर मसीह को दिए जाते हैं। एक बहुत बड़ी सेना। और पौलुस कहता है उनमें

स्थान का घमण्ड होगा। वे जुलूस की अगुवाई करेंगे। मसीह में मरे हुए जी उठेंगे, पौलुस यह भी कहता है, परन्तु जो जीवित हैं वे अपने राजा के पास आयेंगे। मृतक अपनी कब्रों से आयेंगे, और जो जीवित हैं वे अपने राजा के पास आयेंगे।

पौलुस कहता है कि वे हवा में मसीह से मिलेंगे। हम बादलों पर, हवा में मसीह से मिलेंगे। पौलुस कहता है हम हवा में उस से मिलेंगे।

सम्पूर्ण नये नियम में, हवा का यह विचार, शैतान के क्षेत्र, शैतान के राज्य के स्थान को दिखाता है। इफिसियों 2:2 के बारे में सोचें, जहाँ पौलुस अविश्वासियों के बारे में बात करता है, "इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम की रीति पर।" दूसरे शब्दों में, पौलुस कह रहा है हमारे उसके साथ हवा में मिलने का कारण, संभवतः, यह है कि पूरे नयम नियम में इसे शैतान का अधिकार क्षेत्र माना गया है, और हम वहाँ जाकर प्रभु से मिलेंगे। दूसरे शब्दों में, प्रभु उस क्षेत्र पर अधिकार करेगा। वह उस क्षेत्र पर अधिकार करेगा। वह सर्वदा के लिए शैतान के राज्य को पलट देगा।

मृतक अपनी कब्रों से जी उठेंगे। जो जीवित हैं वे अपने राजा के पास आयेंगे। और प्रभु अपने सिंहासन पर विराजमान होगा। प्रभु अपने सिंहासन पर विराजमान होगा। पौलुस कहता है, "तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिए जायेंगे कि हवा में प्रभु से मिलें।" पौलुस कहता है कि हम प्रभु से मिलेंगे। "मिलना" पूरे नियम में वास्तव में एक तकनीकी शब्द है। मत्ती अध्याय 25 में इसका प्रयोग किया गया है जहाँ कुँवारियों के बारे में बताया गया है जो दूल्हे से मिलने के लिए जाती हैं।

इसका प्रयोग प्रेरितों के काम अध्याय 28 में भी किया गया है। यह प्रेरितों के काम का अन्त है, और पौलुस रोम की ओर जा रहा है। और वहाँ वह कहता है– प्रेरितों के काम 28:15–16 में लूका कहता है, "वहाँ से भाई हमारा समाचार सुनकर अप्पियुस के चौक और तीन–सराय तक हम से भेंट करने को निकल आए, जिन्हें देखकर पौलुस ने परमेश्वर का धन्यवाद किया और ढाढ़स बाँधा। और जब हम रोम पहुँचे, तो पौलुस को अकेले रहने की आज्ञा मिल गई।"

दूसरे शब्दों में, उन्होंने प्रतीक्षा नहीं की। उन्होंने पौलुस के नगर में आने तक प्रतीक्षा करने के बाद यह नहीं कहा, "पौलुस, तुम कैसे हो?" इसके विपरीत वे पौलुस से मिलने के लिए नगर से बाहर गए और उसके साथ लौटे। सम्पूर्ण यूनानी साहित्य में इसी प्रकार का विचार है, और नये नियम में भी हम देखते हैं कि यह

शब्द "मिलना" किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति से मिलने के लिए जाने का तकनीकी शब्द है, जैसे आप राजकुमार से मिलने के लिए बाहर निकलते हैं, राजा से मिलने के लिए बाहर निकलते हैं। यदि कैसर आपके शहर में आ रहा है, तो आप प्रतीक्षा नहीं करते हैं कि वह फाटक के भीतर आपके पास आए। आप उसके पास जाते हैं, और फिर आप विजयी जुलूस में उसके साथ लौटते हैं।

और पौलुस मसीह के आगमन के बारे में इसी चित्र को बता रहा है। हाँ, मसीह में मृतक अपनी कब्रों से जी उठेंगे। जो जीवित हैं वे हवा में उससे मिलने के लिए बादलों पर उठा लिए जायेंगे। और हम जब ऐसा करते हैं, हम कहीं ओर जाने के लिए वहाँ जाकर उससे नहीं मिलेंगे, बल्कि विचार यह है कि हम जायेंगे और हम उससे मिलेंगे– क्यों? क्योंकि राजा आ रहा है, और हम उसकी प्रजा के रूप में, उसके अनुयायियों के रूप में, उसके आराधकों के रूप में, उसके नाम के योग्य महिमा, और आदर और सम्मान उसे देते हैं, और हम उसके साथ लौटने के लिए उससे जाकर मिलेंगे।

और पौलुस कहता है, "इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।" उसका आगमन, जैसे यह व्यक्तिगत, सार्वजनिक, और सामर्थी होगा, उसका आना और पृथ्वी पर राज्य करना, वह राज्य एक दिन का नहीं होगा, एक मौसम के लिए नहीं होगा। बल्कि यह सदा के लिए होगा। देखें उस पद के अन्त में वह क्या कहता है। वह कहता है, "और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।" उसका आना स्थाई आगमन है। उसका लौटना स्थाई आगमन है। यह ऐसा ही है। यह पौलुस जो कह रहा है केवल उसका निष्कर्ष नहीं है। मैं नहीं जानता– मैं नहीं जानता यह कब होगा। और जो कोई आपसे कहता है कि वे जानते हैं, वे नहीं जानते। हम नहीं जानते वह कब आ रहा है। यीशु ने स्वयं यह कहा, "उस घड़ी या समय के बारे में मनुष्य का पुत्र भी नहीं जानता।"

मुझे नहीं पता कि क्या यह कल होगा। ऐसा हो सकता है। नहीं पता कि क्या यह अगले सप्ताह होगा। यह संभव है। मुझे नहीं पता कि क्या यह अब से 10,000 वर्ष बाद होगा। मैं केवल इतना जानता हूँ कि यह होगा। अब भी, स्वर्ग के कलैण्डर में यह निशान लगा है कि एक दिन आ रहा है, जैसे पौलुस यहाँ बताता है, एक दिन आ रहा है जब प्रभु स्वयं अपने सिंहासन से उठेगा, और ललकार के साथ, और प्रधान दूत के शब्द के साथ, और परमेश्वर की तुरही की आवाज के साथ, वह मृतकों को कब्र में एकत्रित करेगा, जो अत्यधिक बड़ी सेना होगी। जो जीवित हैं और जो बचे रहेंगे, वे एक साथ बादलों पर उठा लिए जायेंगे। रूपान्तरित, जैसे पौलुस 1 कुरिन्थियों 15 में कहता है, "पलक झपकते ही हम रूपान्तरित हो जायेंगे," उन लोगों के साथ रहने के लिए उठा लिए जायेंगे जो हम से पहले चले गए हैं।।

और फिर हम पृथ्वी पर लौटेंगे, और वह अपना राज्य स्थापित करेगा। यूहन्ना प्रकाशितवाक्य 11:15 में इसी के बारे में बताता है। उसने कहा, "जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया है, और वह युगानुयुग राज्य करेगा।" और पौलुस कहता है, "इस रीति से," प्रभु के इस अनन्त राज्य में, "हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।" परमेश्वर की महिमा हो और मसीह की महिमा हो जो आने वाला है।

और पद 18 में पौलुस वास्तव में कहता है – मेरा विचार है कि यह उसका स्वाभाविक बहाव है जो हम देखते हैं। कि मृत्यु के बारे में हमारा प्रत्युत्तर संसार की हताशा से अलग है। यह सुसमाचार की कहानी पर आधारित है, प्रभु के निश्चित आगमन के द्वारा ताकत पाता है। और अन्तिम, एक दूसरे की खातिर इसका अंगीकार किया जाता है। दूसरे शब्दों में, हम इसे केवल ऐसे ही बैठने नहीं देते हैं। यह रूपान्तरित करने के लिए है। यह इस समय भी हमारे जीने की रीति को रूपान्तरित करने के लिए है।

देखें पद 18 में पौलुस क्या कहता है, "इसलिए," दूसरे शब्दों में, जो कुछ हुआ है उसके प्रकाश में। उस शब्द पर निशान लगाएँ। "इसलिए," जो कुछ कहा गया है उसके प्रकाश में, यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान के प्रकाश में, उसके निश्चित आगमन के प्रकाश में, मृतकों का पुनरूत्थान, जो प्रभु के साथ हैं उनका एक साथ एकत्रित किया जाना, मसीह का पृथ्वी पर आगमन, इन सारी बातों के प्रकाश में, पौलुस कहता है, "इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।"

मैं चाहता हूँ आज आप उत्साहित हों। आप में से कुछ लोग निःसन्देह संघर्ष कर रहे हैं। आप में से कुछ लोग हर प्रकार के विरोध को सह रहे हैं। आप में से कुछ लोग इस समय भी मृत्यु या अपने प्रियजनों के बीच मृत्यु की संभावना से जूझ रहे हैं। और इससे निपटना अत्यधिक कठिन है। और इसलिए, मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ। मैं हमारी सारी मण्डली को उत्साहित करना चाहता हूँ कि एक दिन आ रहा है, जैसे यूहन्ना प्रकाशितवाक्य में बताता है, जब कोई विलाप न होगा, न रोना और न कष्ट होगा, क्योंकि पुरानी बातें बीत जायेंगी।

आज मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ कि आपके जीवन में चाहे कुछ भी हो रहा हो, आपके जीवन में चाहे कोई भी अव्यवस्था हो, आप पौलुस के वचनों को सुनें, कि हाँ, यीशु आ रहा है। वह राज्य करेगा। परन्तु यह इस तथ्य पर आधारित है कि वह अब भी राज्य कर रहा है। राष्ट्रपति और राज्यपाल राज्य नहीं करते हैं। परिस्थितियाँ राज्य नहीं करती हैं। शैतान राज्य नहीं करता है। यीशु राज्य करता है।

और इसलिए, क्या हम आज एक दूसरे को इस सत्य से उत्साहित करेंगे? हम इसे किए बिना कैसे रह सकते हैं? यह जानना, जैसे शेष संसार दिन–प्रतिदिन संघर्ष करता है, नहीं जानते हुए कि क्या आने वाला है, नहीं जानते हुए कि अन्तिम सत्य क्या है, नहीं जानते हुए कि अन्तिम वास्तविकता क्या है। जब हम जानते हैं कि एक राजा है जिसका नाम यीशु है, और वह अब भी राज्य करता है, तो हम एक दूसरे को इस सत्य से उत्साहित किए बिना कैसे रह सकते हैं?

अपनी आत्मा में उत्साहित हों, और अपने आज्ञापालन में उत्साहित हों। आपको याद है पेटन ने क्या कहा था, "मुझे नरभक्षियों की परवाह नहीं है। मैं जा रहा हूँ।" क्यों? "क्योंकि एक दिन आ रहा है जब परमेश्वर मेरी देह को एक या दूसरे तरीके से जीवित कर देगा।"

हम में से बहुत से लोग ऐसे हैं जो वह खरीदते हैं जिसे संसार बेचता है और हम संसार की भागदौड़ में, और संसार की सारी बातों में शामिल होते हैं, और अपने मनों को संसार के सारे विचारों से भर लेते हैं जो हमारे प्रेम को जकड़ लेते हैं जिस से सुसमाचार की सच्चाईयाँ और उसके आने का वायदा किनारे पर धकेल दिया जाता है। और इसलिए, हम बाहर की बातों के पीछे नहीं हैं। हम उन बातों के पीछे हैं जो हमारे दिल में हैं।

और इसलिए, आज मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ, यदि वह आप हैं, आप प्रभु यीशु को जानते हैं। यदि आप वह हैं, तो मैं पूर्ण ताकत से आपको उत्साहित करना चाहूँगा कि आप आज सुसमाचार में नये बनें। मैं आपको पीटना, या तोड़ डालना नहीं चाहता हूँ। परन्तु मैं केवल यह कह रहा हूँ, कि क्यों न आज हम कुछ समय बिताकर परमेश्वर के सामने उन सारी बातों का अंगीकार करें जिन्होंने आपके मन में मसीह के प्रेम को दबा दिया है।

और आप इस पद्यांश पर मनन क्यों नहीं करते हैं। यह मुख्य बने। सुसमाचार और उसके आने की आशा, यह तथ्य कि उसने लोगों को पाप से बचाया है, और निश्चय वह बचाएगा। वह मुख्य बने। अपनी आत्मा में उत्साहित हों, अपने आज्ञापालन में उत्साहित हों, और मेरी आशा है कि हम में से प्रत्येक, चाहे हम कहीं भी हों, यदि हम मसीह को जानते हैं, तो हम अपनी आराधना में उत्साहित हों।

हम इस प्रकार के एक पद्यांश को पढ़कर– इस प्रकार के उद्धारकर्ता के बारे में पढ़कर हम उदासीन कैसे रह सकते हैं? मेरी आशा है कि आज मसीह के प्रति आपका प्रेम जागृत हुआ है, उसके सुसमाचार के प्रति

आपका प्रेम जागृत हुआ है, ताकि हम आत्मा और सच्चाई में उसकी आराधना करें, और उस सुसमाचार के बारे में बात करने का निश्चय करें। आने वाले सप्ताहों में हम जो कुछ भी करेंगे उसका बहाव यही होगा। कि मसीह का सुसमाचार और उसके आने की आशा हमारे होठों पर होगी।

यदि आपने कभी मसीह पर भरोसा नहीं किया है, और इन सबका आपके लिए कोई मतलब नहीं है, और यह सब आपकी समझ में नहीं आता है और सन्देहों से घिरे हैं और संघर्ष कर रहे हैं, यदि आपने कभी मसीह पर भरोसा नहीं किया है, तो आज मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप अपने पापों से मन फिराएँ और अपनी सारी आशा और अपने सारे विश्वास और अपनी सारी अनन्तता मसीह में, उसकी मृत्यु में, और उसके पुनरूत्थान में रखें, और इसके अतिरिक्त कुछ भी न हो।

और यदि आप ऐसा करते हैं, तो दूसरे भाइयों और बहनों के साथ आप के पास भी आशा है, आप इस अंगीकार में संगठित हैं, यीशु मसीह, क्रूस पर मरा, दफनाया गया, जी उठा, स्वर्ग पर उठा लिया गया, और वापस आने वाला है।